ISSN : 2229-5550

नाट्यम् 81

अप्रैल-जून, 2017

Scanned by CamScanner

ISSN : 2229-5550

नाट्यम् 81 अप्रैल-जून, 2017

रंगमंच एवं सौन्दर्यशास्त्र की त्रैमासिक शोधपत्रिका

प्रधान संपादक

राधावल्लभ त्रिपाठी

संपादक

आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

प्रबन्ध संपादक

सञ्जय कुमार

संपादक मण्डल

नौनिहाल गौतम

रामहेत गौतम

शशिकुमार सिंह

किरण आर्या

Dr. R. H. Gautam
Assistant Professor
Department of Sanskrit
Dr. Hari Singh Gour University
SAGAR (M.P.)

प्रकाशक

नाट्य परिषद्, संस्कृत विभाग

डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

Scanned by CamScanner

11. **नाट्यशास्त्र में सुकुमार नृत्त का स्वरूप** 100
गोपाल लाल मीना

12. **अनर्घराघव में भाषा के विविध रूप** 108
राहुल

13. **अशोक विजयम् में धर्मदृष्टि** 113
रामहेत गौतम

14. **मृच्छकटिक में वर्णित लोक का यथार्थ चित्रण** 122
प्रभात कुमार सिंह

Scanned by CamScanner

ग
य
-
।

13

अशोक विजयम् में धर्मदृष्टि

रामहेत गौतम

असहिष्णुता/असहनशीलता Intolrance शब्द भारतीय समाज में इस तरह गूँज रहा है कि साहित्यकार, कलाकार अपने अवार्ड लौटाकर अपना विरोध जता रहा है। नेता बयानबाजी से उसको वेग दे रहे हैं। जिससे न होते हुए भी तनावपूर्ण वातावरण सृजित हो रहा है। बयानबहादुरों के क्रियाकलाप तथा वार्ताएं अग्नि में पेट्रोल का कार्य कर रही हैं। ऐसी स्थिति में मेरा मन भी प्रभावित हुआ और सम्राट अशोक की प्रशासनिक और धार्मिक नीतियों के सम्बन्ध में विचार करने पर ध्यान केन्द्रित हुआ। अतः मैंने सम्राट अशोक के जीवन को आधार बनाकर लिखे गये अशोक विजयम् नाटक को अपनी भावना अभिव्यक्ति का आधार बनाया। आचार्य रामजी उपाध्याय विरचित अशोकविजयम् नाटक में पाँच अंक हैं, इसका कथानक ऐतिहासिक घटनाक्रम है। तीसरी शती ई.पू. में आधुनिक विहार के मगध प्रान्त के मौर्य वंश के महान सम्राट अशोक द्वारा कलिंग विजय के पश्चात् हुए हृदय परिवर्तन के परिणामस्वरूप धर्मविजय करने की कथा वर्णित है। धर्म की स्थापना और लोगों के कल्याण के लिए कलिंगविजय के पश्चात् अशोक कहते हैं कि अब मैं राजराजेश्वर हूँ। सैनिक सम्मान कार्यक्रम के दौरान शहीद नौसेनापति सुधन्वा के पिता सुधर्मा के उलाहनापूर्ण वचन ''शृणोतु तावत्। भवता घोषितमेव - अलक्षेन्द्रादपि बृहत्तर विश्वविजयोद्योगं करिष्यामीति। पूर्वं कलिंगयुद्धे लक्षाधिका निर्दोषा अपि मृताः वैतरणीपारं गमिताः। भाविनि विश्व-विजयोद्योगे भवान् प्रायः कोटिजनानामिह लोकलीलामन्तर्धानीकरिष्यति। मृतकानां प्रत्येकशः समाश्रिता बहुकोटिका भवतो विश्वविजय-तृष्णायाः पूर्तये दुःखा करिष्यन्ते।'' को सुनकर कलिंग विजय में हुए भीषण नरसंहार व मृतकों के परिजनों के विलाप को

Scanned by CamScanner

प्रत्यक्ष देखकर व्यथित हृदय अशोक को भीषण नरसंहार से प्राप्त कलिंग विजय की खुशी से अधिक दुःख होता है और उसके हाथ से तलवार गिर जाती है। उसे आत्मानुभव होता है कि उसके द्वारा भीषण नरसंहार कर प्राप्त विजय लौकिक व क्षणिक सुख देगी। वध, मरण और निष्कासन वाली विजय पापकारक है। भौतिक वस्तुओं के उपभोग से मिलने वाले जीवन के इन्द्रियजनित सुखों की परिधि सीमित है और वास्तव में ये सुख स्वर्ग और मुक्ति (निर्वाण) के आनन्द की तुलना में हीन है। ऐसा विचार कर सम्राट अशोक धम्म के मार्ग की और उन्मुख होता है। अशोक शस्त्र के बिना ही जनहितकारी नीतियों के माध्यम से शासन करने का संकल्प लेता है - आजीवनं निःशस्त्रमेवव्रत आराध्यिष्यामि। अशोक विचार करता है - "राज्यं शस्त्र-सहायता-विरहितं विनाशासनम्। वाञ्छाविश्वजयस्य सिद्धिमतुलां प्राप्नोत्विदं चिन्तये।।" अर्थात् शस्त्र और सेना के बिना राज्य चलाते हुए विश्वविजय करने की इच्छा करूँ। इस प्रकार अशोक ने धर्मविजय का मार्ग अपना लिया।[1] अशोक द्वारा अपनाया गया धर्म सच्चा मानव धर्म है। अशोक-विजयम् में अशोक के मानव धर्म पर चर्चा से पूर्व धर्म को जानना आवश्यक है। स्वर्ग (यागादिरेव धर्म, स्वर्गकामो यजेत्) और मुक्ति (सा विद्या या विमुक्तये) की जो कल्पना दर्शन के द्वारा मानव के हृदय में प्रतिष्ठित की गई है। उसके प्रति आकर्षण होना स्वाभाविक है। मानव की इस स्वाभाविक प्रकृति को दृष्टि में रखते हुए मनीषियों ने जो योजनायें बनायीं, वे धर्म के अंतर्गत आती है। इन योजनाओं के द्वारा यह निर्णय लिया गया है कि विश्व की विविध वस्तुओं के प्रति विविध परिस्थितिओं में मानव कैसा व्यवहार करें? विश्वस्मिन् मे प्रभतु रतिर्दुःखधारा निरोद्धं[2] पाप रहित होना, अनेक लोगों का कल्याण करना, दया, दान, सत्य तथा शौच (शरीर तथा अन्तःकरण की पवित्रता) इन कार्यों में धर्म है। चक्षु-दान, मनुष्यों, चतुष्पदीय प्राणियों, पक्षियों, जलीय जीवों पर विविध प्रकार से अनुग्रह व उनकी जीवन रक्षा आदि के कार्य धर्म हैं।[3] महाकवि अश्वघोष ने धर्म के शाश्वत दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हुए कहा है कि मानव धर्म ऐसा होना चाहिए, जो सबकी प्रतिष्ठा के लिए हो। मानव धर्म से विश्व के देव, पशु-पक्षी और सूर्य-तारे सबका कल्याण होना चाहिए। "सर्वेषु भूतेषु दया हि धर्मः" यही धर्म के विषय में भारत का शाश्वत दृष्टिकोण है। दीन-दुखियों पर दया करना, उन्हें समाज की मुख्य धारा में जोड़ने के लिए उनकी आर्थिक मदद करना, उनके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करना भी एक सभ्य

Scanned by CamScanner

नागरिक का सच्चा मानव धर्म है। अतः सर्वज्ञ अशोक से कहता है- भवतो राज्ये पशुपक्षिणोऽपि वर्तयन्तु।[5] इस बात को आचार्य रामजी उपाध्याय जी भली-भाँति जानते व समझते थे। इसीलिए तो कवि अपने अशोक विजयम् के नायक अशोक के माध्यम से अपनी प्रजा में घोषणा करवाते हैं

त्यक्ते युद्धजयेऽस्तु धर्मविजयो लोकस्य शान्तिप्रदः
सेना सद्व्रतिनां सुशीलमहंसा धर्माध्वसंबोधिनाम्
सर्वत्र व्रजतु प्रहन्तु तमसामोघं जगद्हृद्गतम्
मैत्री सम्मुदिता स्रजां ततिरिव प्रीत्या त्रिलोकं भरेत्।।
सर्वस्वं विजिस्व युद्धविजयी गृहणाति तृष्णाभृतः
किन्तु स्वात्मवशी परोदयपरो धर्माध्वभासवत्प्रभः।
संयच्छत्यखिलं मलीमसंहर सत्त्वाति प्रांजलम्
सद्भावं नवनीतमंजुलनयं बन्धुत्व-संवर्धनम्।।[6]

"भवद्भिरेकैवेयं भावनात्मनि दृढं कार्या-यदस्माभिः क्रियते, तत् सर्वं लोकहिताय प्रभवेदशोकाय समर्पितं च स्यादिति।" अर्थात् आप सबके द्वारा एक ही भावना की जाय जो हमारे द्वारा की जाती है वह समस्त लोक हित के लिए ही की जाय और अशोक के लिए ही सपर्पित हो।[7]

धर्मविजय - आत्मविजय धार्मिक सद्भाव का बीज है। आत्मवेत्ता धार्मिक संकीर्णताओं से मुक्त होकर सर्वधर्मसमभाव के विचार के साथ सर्वकल्याण की बात करना है। जैसे अशोक कहता है कि कलिंग विजय तो युद्धविजय थी जिसके लिए लाखों शूरवीरों का उपक्रम आवश्यक था। अब आगे हमें युद्धविजय नहीं करना है। क्योंकि युद्धविजय सच्ची विजय नहीं, आत्मविजय ही सच्ची विजय है। धम्मपद भी कहता है -

यो सहस्सं सहस्सेन, संगमे मानुसे जिने।
एकं च जेय्यमत्तानं, स वे संगामतुत्तमो।।
अत्ता ह वे जितं सेय्यो, या चायं इतरा पजा।
अत्तादनतस्स पोसस्स, निच्चं सञ्ञतचारिनो।।
नेव देवो न गनधब्बो, न मारो सह ब्रह्मना।
जितं अपजितं कयिरा, तथा रूपस्स जन्तुनो।।[8]

अर्थात् संग्राम मे हजारों सैनिकों की सहायता से हजारों शत्रुसैनिकों को

Scanned by CamScanner

जीतने वाले की अपेक्षा आत्मविजेता ही उत्तम विजेता होता है। अन्य प्रजा को जीतने की अपेक्षा आत्मकविजेता श्रेष्ठ है। आत्मजित तथा संयमित व्यक्ति की विजय को न देवता, न गन्धर्व तथा ब्रह्मा के साथ काम भी उसे निष्फल नहीं, कर सकता। स्वसाक्षात्कार से शत्रु भी मित्र हो जाते हैं। अहमिव सर्वे राजानः साक्षान्मात्रेण शाश्वतं सद्यः शत्रुसामान्यं मैत्रीभावमापद्येरन्।[9]

अतः अब तो धर्मविजय होगी। लाखों सदाचारियों की विश्व के कोने कोने में धर्मयात्रा होगी। प्रेमपूर्ण तरीके से सर्वजन हिताय सर्वजनसुखाय धर्म की सर्वोदयी गति प्रजा को बता देंगे। धर्मविजय युद्धविजय से श्रेष्ठ है क्योंकि युद्ध विजय में विपरीत पक्ष का संहार कर सर्वस्व छीना जाता है। जबकि धर्मविजय में अपना सर्वस्व दान देकर सभी को अपना बना लिया जाता है। व्यक्ति अशेषशत्रु हो जाता है।[10]

अशोक युद्धविजय को त्यागकर धर्म विजय में प्रवृत्त होते हैं। वे तप से अर्जित सिद्धियों को वितरित का सार्वजनिक करते हैं। क्योंकि प्रजा राजा का अनुकरण करती है। प्रजा राजा के गुणों को आत्मसात कर उदात्त आचार-विचार और व्यवहार द्वारा राजा का अनुगमन करती है। यथा राजा तथा प्रजा देश-विदेश की जनता महाराजा के समान सत्य अहिंसा आदि शील व्रतों को अपना लेगी। ता विभूतीरात्मसात्कृत्य विचारचार-व्यवहांरौदात्त्येन सर्वे जना महाराजस्य प्रतिरूपा भविष्यन्ति। भवद्भिः श्रुतं स्यात् यथा राजा प्रजेति[11]

विश्वस्य सर्वेभ्यो राजभ्यः, प्रजाभ्यश्च संविभाजनमेव ममार्जितेशक्तेः परं प्रयोजनम् एवं कृतेऽपि सा शक्तिर्मम सविधे सम्पूर्ण वर्तिष्यते। न केवलं मम साम्राज्यस्यापितु विश्वस्य सर्वाः प्रजा मम सन्तानः एव परिपाल्याः।[12]

जीव हिंसा निषेध - धार्मिक सद्भाव के लिए हिंसा से विरक्ति आवश्यक गुण है। इस बात को सम्राट् अशोक भलीभाँति समझ चुका था। अतः जीवहिंसा को निषेध करते हुए अशोक के द्वारा कहा जाता है कि समाज में अनेक प्रकार के परम्परागत धार्मिक मंगलकारी कार्य सम्पन्न कराने से तो कम ही पुण्य फल मिलता है। स्वोदरभरणाथे पशुपक्षिण हिंसा कहापापमेवानुचितं मां नरके पातयिष्यतीति विश्वसिमि।[13] अर्थात् अपना पेट भरने के लिए पशु-पक्षियों की हत्या करना महाक्रूर पाप है, जो हमें नरक में भेजता है।

दीन-दुखियों, दासों, भृत्यों के प्रति सम्मानजनक व्यवहार, श्रेष्ठजनों का

Scanned by CamScanner

आदर सत्कार करना ही महामंगल मानव धर्म है। इसके आचरण से देश में सामाजिक व साम्प्रदायिक सहिष्णुता, एकता मजबूती से स्थापित होती है। अतः अशोकविजयम् में प्रधानमंत्री मंत्रि परिषद् में महाराज अशोक के प्रस्ताव को रखते हुए कहते हैं कि- महाराजः प्रस्तावयति यत् सर्वे राजकर्मचारिणो धर्मविजयाय सज्जीभवन्तु। प्रतिक्षणं, प्रतिपदं प्रतिश्वासं च धर्मविजयः पथे स्वयमग्रेस रैस्तैस्तैर्लोका आत्मवद् विनेयाः। अस्माभिः सर्वशः स्वामिनश्चिलरनु वर्तनीया।"

अतः अब से हमेशा लोककल्याण के लिए चराचर की रक्षा करना मेरा परम कर्त्तव्य है। "परमनवरतं पशुपक्षिणामपि प्राणरक्षणमिहलोके परलोके च मे कल्याणं वितनोतु।""

स्वार्थपूर्ण वातावरण में मानव की सोच संकीर्ण होती जा रही है। वह अपने वयोवृद्ध माता-पिता, दादा-दादी एवं निःशक्त परिजन आदि के प्रति अपने दायित्वों को अनदेखा करता जा रहा है। इसी का फल है कि बुढ़ापा व बुढ़ापा जन्य बीमारियों से ग्रस्त वृद्ध एवं निःशक्त लोग दर-दर भटकते हुए विभिन्न देवालयों, धर्मशालाओं, बस अड्डों, रेलवे स्टेशनों आदि स्थलों पर देखे जाते हैं। निःशक्तों व बुजुर्गों को इस अभिशाप से बचाने के लिए जनसाधारण को जागृत करने हेतु सामाजिक व प्रशासनिक स्तर पर अनेक कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। सम्राट अशोक के शासनकाल में भी इस प्रकार के जनजागृति के अभियानों की झलक देखने को मिलती है। यथा-

"नाहमिदानीं राजराजेश्वरः विश्वशान्तिरोचनः प्रजापरमेश्वरोऽस्मि। मयाराध्या प्रजा एक परमेश्वरः। न केवलं प्रजा अपितु सकल चराचरं परमेश्वर इति प्रतिभाति मे तस्य रञ्जन प्रेष्ठो मे पराक्रमः"।" मैं इस समय चक्रवर्ती सम्राट् नहीं विश्वशान्ति चाहने वाला, प्रजा को ही परमेश्वर मानने वाला हूँ, प्रजा ही मेरा आराध्य परमेश्वर है, प्रजा ही नहीं सम्पूर्ण चराचर जगत मेरा परमेश्वर है, उसकी खुशी ही मुझे अच्छी लगती है। यही मेरा श्रेष्ठ पराक्रम है।

धार्मिक सहिष्णुता - अशोक के जीवन में उत्कृष्ट कोटि की धार्मिक सहिष्णुता देखने को मिलती है। सभी धर्मों में व्याप्त एकता ही कल्याण परक है। लोगों को सभी धर्मों के मौलिक तत्वों को सुनकर उनका आचरण करना चाहिए। सभी सम्प्रदायों के तपस्वियों, गृहस्थों को दान एवं विविध प्रकार की पूजा (उपहार) आदि द्वारा सम्मान प्रकट करना ही सच्चा धर्म है। सम्राट अशोक के शासन काल में सभी धर्मों के सारभूत तत्त्वों को अधिक महत्व दिया जाता था। लोगों में साम्प्रदायिक

Scanned by CamScanner

एकता कायम रखने के लिए सम्राट अशोक ने लिखवाया है कि -सभी धर्मों का मूल वाणी का संयम है। जिसमें अपने धर्म की अतिशय प्रशंसा न हो और दूसरे धर्म की निन्दा न हो, समुचित अवसर पर दूसरे धर्म-सम्प्रदाय वालों का भी आदर करना चाहिए। इस तरह परधर्म का आदर करने पर व्यक्ति अपने धर्म की वृद्धि तो करता ही है, साथ ही दूसरे धर्म का भी उपकार (सम्मान) करता है।" अशोक ने सभी धर्मों का आदर किया, प्रत्येक धर्म के मानवहितकारी सिद्धान्तों को सहर्ष स्वीकार किया। अशोक के लिये लोक कल्याण ही सबसे बड़ा धर्म था। अशोक के प्रशासक व कर्मचारी सभी उसके मानव धर्म का अनुकरण करते थे। द्वाराध्यक्ष कहता है- ''तदा प्रभृति तस्य पराक्रमस्य काप्यपूर्वारीतिर्विभाव्यते।''[18]

यही साम्प्रदायिक सद्भावना है। जिन लोगों, में साम्प्रदायिक सद्भावना नहीं होती वे किसी का तो भला कर नहीं सकते, उल्टा अपना ह्रास सुनिश्चित करते हैं। जो लोग अपने धर्म का सम्मान करते हैं पर दूसरे धर्म की निन्दा करते रहते हैं वे अपने ही धर्म का ह्रास करते हैं इस बात की पुष्टि व प्रमाण महाभारत की धर्म सम्बन्धी उक्ति में भी मिलता हैं-

धर्मं यो बाधते धर्मो न स धर्मः कुधर्मः तत्।
अविरोधत् तु यो धर्मः स धर्मः सत्यविक्रम।।[19]

अर्थात् धर्म वही है, जो किसी धर्म का विरोध नहीं करता है। जो धर्म किसी दूसरे धर्म का विरोध करता है। वह कुधर्म है। अतएव सभी धर्मों में व्याप्त एकता ही कल्याण परक है। अन्य सम्प्रदाय वाले सारभूत विचारों को ध्यान पूर्वक सुनें और उन्हें आत्मसात करते हुए उनका सम्मान सभी लोगों द्वारा किया जाना चाहिए। प्रत्येक धर्म जगत कल्याण की बात प्रमुखता से कहता है। अपनी समृद्धि के लिए क्रूरता व हिंसा का मार्ग अपनाने की बात कोई भी धर्म नहीं कहता। सम्राट अशोक ने लोकहित भावना को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया है। लोक कल्याण का कार्य पुण्य दायक है, जबकि आतंक, निर्दयता, क्रोध और अपमान, ईर्ष्या आदि पाप के मार्ग हैं। इनसे मुक्त रहकर मनुष्य को अपने विनाश से बचना चाहिए।[20]

प्रजा में द्वेषभाव को रोकने लिए प्रशासनिक प्रयास - अपनी प्रजा को हिंसा व खूनी संघर्ष से दूर रखना भी प्रशासकों के मानव धर्म व प्रशासनिक कर्त्तव्य के अन्तर्गत आता है। प्रजा के प्रति सजग रहना प्रशासकों का प्रमुख धर्म है। प्रजापालन के प्रति अपनी सजगता को दिखाते हुए सम्राट अशोक ने प्रजा हित में विविध, स्पष्ट व

Scanned by CamScanner

सख्त निर्देश दिये थे। अशोक आदेश प्रसारित करवाता है कि दिन हो या रात कहीं भी किसी का भी कोई भी छोटा-बड़ा काम हो, मुझे बताया जाये। मैं तत्काल उसे पूरा करूँगा। पूर्णनिर्पेक्षता के साथ वह प्रजापालन की नई नीतियों का विमर्श पड़ौसी राजाओं और अपने प्रशासकों निरंतर करते रहते थे। जैसे- "महाराजेनापि ते दूतैर्भाविप्रजापालनस्याभिनवविधं प्रत्यक्षं निभालयितुमामन्त्रिता।"

"देवताओं के प्रियदर्शी राजा ने ऐसा कहा कि लम्बे समय से अब तक जनता के मामलों में राजा को जानकारी नहीं होने से समय पर न्याय नहीं हो पाता था। अब मैंने आदेश दे दिया है-चाहे मैं भोजन करता रहूँ, या अन्तःपुर में रहूँ, या शयनकक्ष में, रथ, पालकी, या उपवन में, जहाँ कहीं भी रहूँ, सन्देश वाहक तैनात कर दिये जाएँ और वे जनता के मामले मुझे हर समय प्रस्तुत करें। जिससे हर स्थान पर मैं जनता के मामलों को सुलझा सकूँ। मैं जो भी आज्ञा देता हूँ, उस पर तुरन्त कार्यवाही की जाए।" सम्राट अशोक की यह सद्भावपूर्ण जनहितकारी घोषणाएँ उसकी प्रजापालन की उत्तम नीतियों से अवगत कराते हुए वर्तमान के प्रशासकों को जनहित के लिए प्रेरित करती है। प्रशासनिक व्यवस्था में चुस्ती-फुर्ती व तुरन्त संवेदनशीलता प्रजा में सामाजिक व सांप्रदायिक सौहार्द्र बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सम्पूर्ण कृति में देखने को मिलता है कि निर्देशमात्र की नहीं दिये सम्राट ने स्वयं भी उन नियमों को अपनाया है। जो आज के प्रशासकों के लिए सीख है। महामंत्री द्वारा राजा के प्रति कहे गये वचनों से राजा का प्रजाप्रेम स्पष्ट हो जाता है। वह कहता है कि हम लोगों के सौभाग्य से सम्राट् की तपः साधना पूर्ण हुई। जब से महाराज के मन में तपः साधना की प्रवृत्ति उदित हुई, हमारी राजधानी जनपद और साम्राज्य में सर्वस्व वैभव-विकास, सुशान्ति और परस्पर प्रेम की बाढ़ आ गई। पूरे साम्राज्य में जंगलराज न होकर मंगल राज हो गया है। तपः साधनोदर्केण-रूपशील माधुर्येण च शाश्वतं बहुमतस्यास्माकं साम्राज्यो दिव्या काव्यनिर्वनीयाभिख्या विभाति।[22] अत्र भवतः तपः साधना प्रवृत्ते रूदय मात्रेणास्माकं राजधानी, जनपदः साम्राज्यं च सर्वत्र विभव-विकास- सुख-शान्ति-संप्रियता- वैपुल्यमवाप्नुवन। मगधसाम्राज्यं सर्वत्रसाकल्येन मंगलयतनंप्रभवेदिति।[23] दिल्ली स्थित सम्राट अशोक के पालि भाषा एवं ब्राह्मी लिपि में लिखित 7वें स्तम्भलेख में भी टंकित है कि पराक्रम की नई दिशा सर्वत्र प्रकाशित हो रही है।[24]

परम्पराओं का यथोचित निर्वहन – परम्परायें समय-समय पर प्रजा के मध्य से ही उपजती हैं और जनसामान्य के कार्यकलापों को अपरोक्ष रूप से कल्याणकारी

Scanned by CamScanner

बनाये रखने में सहायक सिद्ध होती है। एक निश्चित प्रयोजन से सृजित परम्परायें अपनी प्रासंगिकता को पूर्ण करने के पश्चात् उस निश्चित प्रयोजन के अभाव में अप्रासंगिक हो जाती हैं। विवेक किये बिना परंपरायें देश व समाज के विकास में बाधक सिद्ध होने लगती हैं। अतः अशोक ने अपने निर्देशों में परम्परायें निभाने की अपेक्षा सर्वजनहिताय-सर्वजन सुखाय की भावना से पूर्ण आदर्श व्यवहार अपनाने पर अधिक बल दिया है। जैसे- समस्त प्राणियों पर दया, दीन दुखियों, व सेवकों के साथ सम्मान जनक व्यवहार, बुजुर्गों की सेवा व सम्मान आदि धर्म के सच्चे अनुष्ठान हैं। जिनसे यह लोक व परलोक दोनों सुधरते हैं।[25]

लोकहित सर्वोपरि - किसी भी प्रशासक के लिए प्रजाहित सर्वोपरि होता है। अतः सम्राट अशोक घोषणा करते हैं कि- भवद्भिरेकैवेयंभ भावनात्मनि दृढं कार्या-यदस्माभिः क्रियते, तत् सर्वं लोकहिताय प्रभवेदशोकाय समर्पित च स्यादिति। रम्या स्यात् प्रकृतिः परार्थधात्कासौख्यस्य भूमास्पदं लोको विस्मरतात् परस्परगतामुद्वेजिनीं वैरिताम्। विश्वः सर्वहितं तनोतु निरतां सौहार्दमुन्मीलयन् ऐश्वर्योन्मुखमेधतां जगदिदं शान्ति-स्वरं भावयत।।[26] अर्थात् आपको केवल एक ही काम करते रहना है। आप सदा इस भावना से पवित्र बने रहें कि मैं जो कुछ करता हूँ वह लोक हित के लिए करता हूँ अशोक के लिए करता हूँ अशोक जो कुछ करते हैं वह मेरे लिए करते हैं। हमारी सारी प्रवृत्तियाँ आपको लाभ पहुँचाने के लिए हैं। और एक समग्र चराचर को लाभ पहुँचाने के लिए है। आप ऐसा न सोंचे कि आप अकेले हैं। मैं निरन्तर सोते जगते आपको सहारा देते हुए प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में आपके साथ हूँ। मुझे अपने विचार से सौरभ से विश्व को सुवासित करना है। यही हमारी विश्व विजय है। विश्वशान्ति और सर्वोदय का मूलमन्त्र।

निष्कर्ष - प्राणिमात्र पर दया, विश्व-वन्धुत्व, सत्य-अहिंसा और आचार विचार की शुद्धता पर कवि ने प्रमुखत से बल दिया है। अशोक के द्वारा धार्मिक सहिष्णुता को सर्वोपरि रखना तथा उसके संरक्षण व संवर्धन के लिए निरन्तर प्रयासों को लेखनीबद्ध कर कवि ने वर्तमान के प्रशासकों को अतीत के प्रशासकीय गौरव से अवगत कराकर सुकर कार्य किया है। प्रधान रूप से बौद्ध होते हुए भी सर्वधर्म समृद्धि की कामना करते अशोक के चरित्रांकन से जनसाधारण को जिस धर्म की शिक्षा दी है, वह सभी धर्मों का निचोड़ है। यही कवि और उसके नायक का सच्चा धर्म है।

"भवतु सर्व मंगलम्"

Scanned by CamScanner

सन्दर्भ -

1 अशोक विजयम् द्वितीय अंक पृ.12
2 अशोक-विजयम् अंक 4 पृ. 27
3 अशोक का दिल्ली स्तम्भ लेख
4 बुद्धचरित 9/17
5 अशोक विजयम् पृ. 20 अंक 3
6 अशोक विजयम् पृ. 29 अंक 5
7 अशोक विजयम् पृ. 34 अंक 5
8 धम्मपद-103-105
9 अशोक-विजयम् अंक-5 पृ.-33
10 अशोक-विजयम् पृष्ठ 29
11 अशोक-विजयम् अंक-5 पृ.-30
12 अशोक-विजयम् अंक-5 पृ.-33
13 अशोकविजयम् पृष्ठ 20 अंक 3
14 अशोक-विजयम् अंक-5 पृ. 28
15 अशोक विजयम् पृ. 21 अंक 3
16 अशोक विजयम्
17 अशोक के अभिलेख
18 अशोकविजयम्
19 महाभारत वन पर्व- 131.10
20 दिल्ली स्थित प्राकृत भाषा ब्राह्मी लिपि में टंकित सम्राट अशोक का तीसरा स्तम्भ लेख
21 गिरनार सौराष्ट्र स्थित सम्राट अशोक का पालि भाषा, ब्राह्मी लिपि में लिखित 6वाॅ शिलालेख22 अशोक विजयम् पृ. 31 अंक 5
23 अशोक-विजयम् पृ. 32 अंक 5
24 अशोक-विजयम् पृ. 28 अंक 5
25 दिल्ली स्थित सम्राट अशोक का पालि भाषा, ब्राह्मी लिपि में लिखित 7वाॅ स्तम्भलेख
26 अशोक-विजयम् अंक 5 पृ. 34

Scanned by CamScanner